International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बौद्ध शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ सीपू जायसवाल, एसोसिएट प्रोफेसर
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्विद्यालय

गौतम बुद्ध एक महान आध्यत्मिक गुरु व महान उपदेशक, और सबसे ज्यादा वह एक महान समाज सुधारक थे। उन्होंने अपने उपदेशो में सामाजिक असमानता और कर्मकांडों के विरुद्ध जनमानस के बीच एक दृढ़ और मजबूत मिसाल कायम की। बुद्ध ने व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर उत्थान के लिए अपने उपदेश दिए। बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद आजीवन लोक कल्याण के लिए जो शिक्षाएं और दर्शन दिया, उनकी वर्तमान समय में भी प्रासंगिकता है। वर्तमान समय में चारो तरफ मनुष्य समस्याओं से ग्रस्त है , जिस से वह कभी सुख और शांति का अनुभव नहीं कर सकता, बुद्ध काल में शिक्षा बहुत व्यवाहरिक थी, उन्होंने उपदेशों में सदैव मानवता , करुणा, मैत्रीभाव को प्रमुखता दी, उन्होंने बताया कि शील, समाधि और प्रज्ञा ही विशुद्धि का मार्ग है, अपने ज्ञान प्राप्ति के पश्चात, वह पैंतालीस वर्षों तक घूम घूम कर मानव कल्याण के लिए उपदेश देते रहे।

बुद्ध की शिक्षाओं का सार है– शील, समाधि और प्रज्ञा। बुद्ध की शिक्षा अत्यन्त व्यावहारिक थी। उसमें किसी भी तरह के रहस्यों और आडम्बरों के लिए काई स्थान न था। उनके अनुसार एक मानव का दूसरे मानव के साथ व्यवहार मानवता के आधार पर होना चाहिए, न कि जाति, वर्ण और लिंग आदि के आधार पर। बुद्ध ने कहा कि मैं अपनी–अपनी भाषा में उन्हें बुद्धवचन संग्रहीत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ– अनुजानामि भिक्खवे, सकाय निरुत्तिया बुद्धवचनं परियापुणितुं ति।[1] बुद्ध ने दुःख से निवारण के लिए मार्ग दिया, जिसे आर्य अष्टांगिक मार्ग कहते हैं, उन्होंने सम्बोधि प्राप्त करते हुए रात्रि के अंतिम याम में प्रतीत्य समुत्पाद का साक्षात्कार किया था।[2] प्रतीत्य समत्पाद या कार्यकारणवाद का सिद्धांत, बौद्ध दर्शन का आधार है, प्रतीत्य समुत्पाद का अर्थ है–कारणतावाद। प्रतीत्य अर्थात् किसी वस्तु की उत्पत्ति होने पर, समुत्पाद अर्थात् अन्य वस्तु की उत्पत्ति। अतः किसी वस्तु की उत्पत्ति होने पर अन्य वस्तु की उत्पत्ति। इसलिये प्रतीत्य समुत्पाद को कार्य कारण का सिद्धांत कहते हैं, इसको मध्यम मार्ग भी कहते हैं। बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के सम्बन्ध में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया, आर्य सत्य बौद्ध धर्म का मूल आधार हैं, जो इस प्रकार हैं– 1. दुःख – संसार में सर्वत्र दुःख है। जीवन दुःखों व कष्टों से भरा है। 2. दुःख समुदय – दुःख समुदय अर्थात दुःख उत्पन्न होने के कारण हैं। प्रत्येक वस्तु का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। 3. दुःख निरोध – दुःख का अन्त सम्भव है। अविद्या तथा तृष्णा का नाश करके दुःख का अन्त किया जा सकता है। 4. दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा – अष्टांगिक मार्ग ही दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा हैं। अष्टांगिक मार्ग के अनुशीलन से मनुष्य की भव तृष्णा नष्ट होने लगती है और वह निर्वाण की ओर अग्रसर हो जाता है। अष्टांगिक मार्ग के साधन हैं– सम्यक–दृष्टि, सम्यक–संकल्प, सम्यक–वाक, सम्यक–कर्मान्त, सम्यक–आजीव, सम्यक–व्यायाम, सम्यक–समृति, सम्यक–समाधि। बौद्ध धर्म म निर्वाण प्राप्ति के लिए सदाचार तथा नैतिक जीवन पर अधिक बल दिया गया। दस शीलों का पालन सदाचारी तथा नैतिक जीवन का आधार है। इन दस शीलों को शिक्षापद भी कहा जाता है।

1. अहिंसा
2. सत्य
3. अस्तेय (चोरी न करना)

[1] *चुल्लवग्ग,* पृ–228
[2] *बोधिकथा, विनयपिटक*

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

4. समय से भोजन ग्रहण करना
5. मद्य का सेवन न करना
6. ब्रह्मचर्य का पालन करना
7. अपरिग्रह (धन संचय न करना)
8. आराम दायक शैय्या का त्याग करना
9. व्यभिचार न करना
10. आभूषणों का त्याग करना

बुद्ध मानव–समानता के पक्षधर :

बुद्ध के अनुसार सभी स्त्री एवं पुरुषों में समान योग्यता एवं अधिकार हैं, धार्मिक और सामाजिक, शिक्षा और आजीविका के क्षेत्र में भी वे समानता के पक्षधर थे। उनके अनुसार एक मानव का दूसरे मानव के साथ व्यवहार मानवता के आधार पर होना चाहिए, न कि जाति, वर्ण, लिंग आदि के आधार पर, क्योंकि सभी प्राणी समान हैं। न जच्चा वसलो होति,न जच्चा होति ब्राह्मणो। कम्मुना वसलो होति, कम्मुना होति ब्राह्मणो। अर्थात जन्म (जाति) से न कोई नीचा (वृषल) होता है और न कोई जन्म से ब्राह्मण होता है। कर्म से कोई नीचा होता है और कर्म से ही ब्राह्मण होता है।[3] उन्होंने कहा कि जैसे सभी नदियाँ समुद्र में मिलकर अपना नाम, रूप और विशेषताएं खो देती ह, उसी प्रकार उनके संघ में प्रविष्ट होकर जाति, वर्ण आदि विशेषताओं को खो देते हैं और समान हो जाते हैं। आज आधुनिक समय में बुद्ध की शिक्षाओं में निहित बौद्ध शिक्षा का प्राचीन और आधुनिक भारत के बौद्धिक और आध्यात्मिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

भारत में बौद्ध शिक्षा

बौद्ध शिक्षा के सिद्धांत, कार्यप्रणाली, समकालीन भारतीय शिक्षा के लिए काफी प्रासंगिक है। इस से यह भी पता चलता है कि कैसे बौद्ध शिक्षा, समग्र विकास, नैतिक जीवन पर जोर और आलोचनात्मक साच, भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सामने आने वाली कुछ चुनौतियों का जैसे कि तनाव, नैतिक शिक्षा की कमी आदि का समाधान कर सकती है। बौद्ध शैक्षिक सिद्धांतों की सहायता से भारत एक अधिक दयालु, पूर्ण और बौद्धिक रूप से सक्षम नागरिक वर्ग को विकसित कर सकता है। बौद्ध शिक्षा, प्राचीन भारत में सीखने की एक अलग प्रणाली के रूप में उभरी, जो मन, नैतिक आचरण और ज्ञान के विकास पर केंद्रित थी। इसने भारतीय बौद्धिक परंपराओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और नागार्जुन, वासुबंधु और दिगनाग जैसे कई प्रसिद्ध विद्वानों को जन्म दिया। नालंदा, विक्रमशिला और तक्षशिला जैसे बौद्ध मठ विश्वविद्यालय शिक्षा के केंद्र बन गए, जिन्होंने पूरे एशिया के छात्रों और विद्वानों को आकर्षित किया। समकालीन समय में, भारतीय शिक्षा प्रणाली को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें रट्टे से सीखने पर अधिक जोर देना, परीक्षा का दबाव और नैतिक शिक्षा की कमी शामिल ह। बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ, ध्यान, करुणा और आलोचनात्मक जांच पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, मूल्यवान अंतदृष्टि प्रदान करती हैं।

बौद्ध शैक्षणिक संस्थानों का उदय

भारत में बौद्ध शिक्षा, मठवासी समुदायों (संघों) की स्थापना के साथ शुरू हुई जहां भिक्षुओं और ननों को धम्म (बुद्ध की शिक्षा) और विनय (मठ संहिता) सिखाया जाता था। इन समुदायों ने नैतिक आचरण (शील), एकाग्रता (समाधि) और ज्ञान के विकास पर जोर दिया। समय के साथ, ये मठवासी समुदाय बड़े शैक्षणिक संस्थानों में विकसित हुए, जिनमें सबसे उल्लेखनीय नालंदा है, जिस की स्थापना 5वीं शताब्दी ईस्वी मे हुई थी, और विक्रमशिला, जिसकी स्थापना 8वीं शताब्दी

[3] *वसल सुत्त, सुत्तनिपात*

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ईस्वी में हुई थी। इन्हीं संस्थानों के छात्रावासों में विद्यार्थी तब तक रहता था, जब तक वह सम्पूर्ण अध्ययन समाप्त नहीं कर लेता था। शिक्षा का अभिप्राय तो वस्तुतः पूर्ण तब होता है जब छात्र ज्ञान ग्रहण करते है और उनके अन्दर शिक्षित होने का गुण उत्पन्न हो जाता है अर्थात् दूसरे के प्रति सम्मान, आदर प्रेम, मानवता व मानवीय गुणों का विकास हो जाता है। विश्वविद्यालयों ने बौद्ध दर्शन, तर्क, तत्वमीमांसा, व्याकरण, चिकित्सा और खगोल विज्ञान सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला की पेशकश की। शिक्षा, धार्मिक शिक्षाओं तक ही सीमित नहीं थी, इसका विस्तार विभिन्न धर्म निरपेक्ष विषयों तक हुआ, जिससे ये संस्थान शिक्षा के व्यापक केंद्र बन गए। शिक्षा का माध्यम आमतौर पर पालि या संस्कृत था और शिक्षा शास्त्र में बहस, चर्चा और आलोचनात्मक विश्लेषण शामिल थे, जिससे विषय की गहरी समझ को बढ़ावा मिलता था। बौद्ध शिक्षा मन के क्रमिक विकास के सिद्धांत पर आधारित थी। सीखने की प्रक्रिया व्यक्ति को बदलने के बारे में भी थी। पाठ्यक्रम को ज्ञान, नैतिक आचरण और मानसिक अनुशासन विकसित करने के लिए बनाया गया था। शिक्षण के प्राथमिक तरीकों में सूत्र पाठ और स्मरणः बौद्ध ग्रंथों को याद करना और पाठ करना, जिससे शिक्षाओं को बनाए रखने में मदद मिली। आलोचनात्मक साच, विचारों की स्पष्टता विकसित करने के लिए संवाद और बहस में शामिल होने को प्रोत्साहित किया गया। ध्यान शिक्षा का एक अभिन्न अंग था, जिसका उद्देश्य एकाग्रता, ध्यान और अंतदृ ष्टि विकसित करना था।

छात्रों में रटने की समस्या और उसका समाधान :

वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में छात्र जानकारी को सही मायने में समझे बिना रट कर याद रखते हैं, यह दृष्टिकोण अक्सर छात्रों को ऊपरी सतह के ज्ञान के लिए तैयार करता है और आलोचनात्मक साच को प्रोत्साहित करने में विफल रहता है। इसके विपरीत, बौद्ध शिक्षा गहरी पूछताछ और समझ को प्रोत्साहित करती है और जिज्ञासा और अन्वेषण की मानसिकता को बढ़ावा देती है। अतः भारतीय पाठ्यक्रम में संवाद, बहस और आलोचनात्मक जांच के बौद्ध सिद्धांतों को एकीकृत करने से विषय वस्तु के साथ अधिक सार्थक जुड़ाव की ओर स्थानांतरित करने में मदद मिल सकती है। यह दृ ष्टिकोण न केवल छात्रों की बौद्धिक क्षमताओं को बढ़ाएगा बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन की स्थितियों में जटिल समस्या–समाधान के लिए भी तैयार करेगा।

नैतिक और नैतिक शिक्षा को शामिल करना

आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण अंतरालों में से एक नैतिक और नैतिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने की कमी है। छात्रों में अनैतिक व्यवहार, भ्रष्टाचार और तनाव की बढ़ती घटनाओं के साथ, मूल्य आधारित शिक्षा को फिर से शुरू करने की आवश्यकता है। बौद्ध शिक्षा, शील (नैतिक आचरण) पर जोर देने के साथ, नैतिकता और मूल्यों को पढ़ाने के लिए एक मजबूत नींव प्रदान करती है, नैतिकता के लिये, दैनिक जीवन में तार्किक और सामाजिक सिद्धांतों के प्रयोग पर जोर दिया गया, यह सुनिश्चित करते हुए कि शिक्षा से व्यक्तिगत परिवर्तन हो। करुणा, ध्यान और नैतिक जीवन पर शिक्षाओं को शामिल करके, भारतीय शिक्षा प्रणाली ऐसे व्यक्तियों को विकसित कर सकती है जो न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम हैं, बल्कि नैतिक रूप से भी सक्षम हैं। यह एकीकरण जिम्मेदार नागरिकों के विकास में मदद करेगा जो समाज में सकारात्मक योगदान देते हैं।

मानसिक कल्याण को बढ़ावा देना

शिक्षाविदों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के दबाव ने भारतीय छात्रों में उच्च स्तर का तनाव और चिंता पैदा कर दी है। माइंडफुलनेस का अभ्यास, जो बौद्ध शिक्षा के लिए केंद्रीय है, इस मुद्दे का एक व्यावहारिक समाधान प्रदान करता है। माइंडफुलनेस का अभ्यास तनाव को कम करने, ध्यान केंद्रित करने और मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। विद्यालयों में माइंडफुलनेस–आधारित प्रथाओं को लागू करने से छात्रों को तनाव का बेहतर प्रबंधन करने, उनकी एकाग्रता में सुधार करने और सीखने का एक सकारात्मक वातावरण बनाने में मदद मिल सकती है। यह दृष्टिकोण छात्रों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के समग्र विकास के साथ संरेखित होता है, जो शैक्षणिक उपलब्धि के अलावा उनके मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित करता है।

समावेशिता और विविधता को प्रोत्साहित करना

बौद्ध शिक्षा ने ऐतिहासिक रूप से समावेशिता और विविधता को अपनाया, जैसा कि नालंदा और तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों में विविध छात्र आबादी से स्पष्ट होता है। यह समावेशी दृष्टिकोण भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए एक मूल्यवान सबक हो सकता है। शैक्षिक ढांचे के भीतर विविधता के लिए समावेशिता और सम्मान को बढ़ावा देने से एक अधिक न्याय संगत और न्यायपूर्ण समाज का निर्माण हो सकता है। यह सभी प्राणियों के परस्पर जुड़ाव और दूसरों के प्रति करुणा और समझ के महत्व पर बौद्ध शिक्षाओं को एकीकृत कर के प्राप्त किया जा सकता है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में बौद्ध शैक्षिक सिद्धांतों का एकीकरण कई लाभ प्रदान करता है, परन्तु चुनौतियों पर विचार करना आवश्यक है:

1. धर्मनिरपेक्षता : भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है, और किसी भी पूर्वाग्रह या बहिष्कार से बचने के लिए शिक्षा में धार्मिक शिक्षाओं के समावेश को संवेदनशीलता के साथ देखा जाना चाहिए।
2. आधुनिक संदर्भों के अनुकूलन : बौद्ध शिक्षा के सिद्धांतों को उनके सार को खोए बिना समकालीन संदर्भों के अनुरूप अनुकूलित करने की आवश्यकता है।
3. शिक्षा क प्रशिक्षण : शिक्षकों को बौद्ध शैक्षणिक तरीकों और सिद्धांतों में पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें पाठ्यक्रम में प्रभावी ढंग से एकीकृत किया जा सके।

बौद्ध शिक्षा, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देने की अपनी समृद्ध परंपरा के साथ, समकालीन भारतीय शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण प्रासंगिकता रखती है। वर्तमान प्रणाली की कमियों को दूर करके–जैसे कि रटने की शिक्षा, नैतिक शिक्षा की कमी और छात्र–तनाव। अतः बौद्ध सिद्धांत भारत में एक अधिक समग्र, समावेशी और प्रभावी शिक्षा प्रणाली के विकास में योगदान कर सकते हैं। बौद्ध शैक्षिक सिद्धांतों का एकीकरण ऐसे व्यक्तियों के पोषण की दिशा में एक मार्ग प्रदान करता है जो न केवल जानकार हैं बल्कि दयालु, नैतिक और मानसिक रूप से लचीले हैं। यह दृष्टिकोण शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों के साथ संरेखित होता है, जिसका उद्देश्य एक न्याय पूर्ण और सामंजस्य पूर्ण समाज का निर्माण करना है।

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. सुत्त निपात, भिक्षु धर्म रक्षित, दिल्ली रू मोतीलाल बनारसीदास , 1988
2. विनयपिटक, राहुल सांकृत्यायन, भातीय बौध्द शिक्षा परिषद्, 1934
3. विसुद्धिमग्ग, स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसी, बौद्ध भारती प्रकाशन, 2006
4. दीघनिकाय, स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, वाराणसी, बौद्ध भारती प्रकाशन, 2009
5. ए. वायने, बौद्ध ध्यान की उत्पत्ति, 2007
6. एस. दत्त, भारत के बौद्ध भिक्षु और मठ, 1962
7. एच. डब्ल्यू. शूमन, ऐतिहासिक बुद्धः बौद्ध धर्म के संस्थापक का समय, जीवन और शिक्षाएँ, दिल्ली : मोतीलाल बनारसी दास, 2004
8. बलदेव उपाध्याय, बौद्ध दर्शन मीमांसा, दिल्ली, चौखम्बा, 2011
9. भरत सिंह उपाध्याय, पालि साहित्य का इतिहास, प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मलेन, 2000
10. आचार्य नरेन्द्रदेव, बौद्ध धर्म दर्शन, पटना, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, 2013
11. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, बौद्धधर्म के विकास का इतिहास, उ0प्र0 लखनऊ, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, 1973